डॉ० राम प्रसाद सिंह

जन्म तिथि : 10 जुलाई 1933
जन्म स्थान : बेलखरा, अरवल

निवास : मगही लोक, तुतबाड़ी, गया

सिच्छा : एम.ए. (हिन्दी), पी-एच.डी.

सम्प्रति : जगजीवन कॉलेज, गया में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद से सेवा-निवृत

परकासित पुस्तक :

1. मगध की लोक-कथाएँ : अनुशीलन एवं संचयन
2. मगही लोक-गीत के वृहत् संग्रह
3. मगही साहित्य का इतिहास
4. नरक सरग धरती (मगही उपन्यास)
5. समस्या (उपन्यास)
6. लोहा मरद (मगही महाकाव्य)
7. सरहपाद (प्रबंध काव्य)

सम्पादित ग्रंथ :

8. परस पल्लव (कविता संकलन)
9. नव निबंध (निबंध संग्रह)
10. मगही के मानक रूप (निबंध संग्रह)
11. सोरही (कहानी संग्रह)
12. एकारसी (एकांकी संग्रह)

पत्रिका सम्पादन :

मगही लोक (मासिक पत्रिका)

मगही समाज (मासिक पत्रिका)

पुरस्कार :

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार, नई दिल्ली से मगही साहित्य सम्मान मिलल।
2. बिहार मगही अकादमी, पटना के अध्यक्ष पद पर रहलन।

ई कहानी खानाबदोस जीवन के सच्चाई के तस्वीर हे । कहानी के माध्यम से लेखक बतावेला चाहइत हथ कि नट-नट्टिन एक जगह स्थायी रूप से न रहऽ हथ, बाकि ऊ भी अदमिये हथ। उनका साथ भी आम अदमी के जइसन बेवहार करे के चाहीं। उनकर जीवन के सभ्य आउ सुसंस्कृत बनावे खातिर सरकार के भी धेयान देवे के चाहीं, ताकि देस के चहुँमुखी विकास के मुख्य धारा में ऊ भी जुड़ सकथ।

बराबर के तलहट्टी में

'एक कटोरा भात दे दे माई । तोरा दूध-पूत बढ़ती करथुन सिव बाबा।' अवाज सुनके तिलेसरी के माय खखुआय लगल—'धर मुझौसी के रे, अभी भातो न बनल हे आउ टपक पड़ल। दिन भर तम्बू में पड़ल रहऽ हे आउ बेरे डुबते कटोरा लेके गाँव में निकल जाहे।

'काहे खिसिआइत ही माँ जी ! तोरा देस में आ गेली तऽ तोहनी पर पहाड़ टूट गेलो। का ई हम्मर देस न हे जेकर जमीन पर रह सकऽ ही।'

'धत् भतरमारी के रे, माँगत भीख आउ बूझत देस के जामा। मार तो एक लकड़ी कि रिरिआइत भागे। कान कपार बचा के दे एक झवदा।'

तिलेसरी के माय के डाँट के असर ओकरा पर कुच्छो न पड़ल। ऊ रटइत रहल—'माँ जी, छुच्छे सियार खाइत-खाइत मिजाज घबरा गेलो हे, एक कटोरी भात दे दे। सिव जी तोरा भला करतो।'

'भागऽ हें कि नऽ सिव के चाची, कि तिलेसरी से माँग धोआ दियो। अगे तिलेसरी, तिलेसरी गे, तूँ मर गेलें, अबके नरेटी चिरइत हले आउ तुरते लगऽ हउ कि उपह गेले।'

'अयलियो माय, का कहऽ हें ? तनि भुलेटन हीं चल गेलियो हल।'

'लगऽ हो कि भुलेटन के बेटा तोरा घोंटी पिया देलको हे। हरजाई कहीं के, जो ओकरे हीं रह ! कुल के उजागर कर !'

'तिलेसरी माय के धेघा में लपटा गेल तब ओकर सब खींस खतम हो गेल। एकलौती बेटी के चुम्मा लेके दुलार से डाँटलक—'देख बेटी, तूँ सेयान हो गेले। बेर डुबे के बाद तोरा एन्ने-ओन्ने घूमे में ठीक न हे।'

'अच्छे माय ! अब हम तोरे भिजुन बइठल रहबो।'

'बइठे कहइत ही। दिन खानी टोला-टाटी में घूर लिहें। देख तो तनि दूरा पर एगो नट्टिन रटइत हो। जाके कह दे कि खाय हो जाएत, तऽ तनि देरी में भात ले जाएत। समझलें, समझा के कह दे।'

तिलेसरी दूरा पर आयल तऽ ऊ भिखारिन ओकरा आँख चिर के देखे लगल। तिलेसरी कहलक—'आखें से खा जइबे ? कय दिन से भुक्खल हें।'

भिखारिन घिघिआयल—'माईं तनि एक कटोरी भात ला दे। तोर दुलहा तोरा बहुत चाहतो। खेते में धान के बोझा पर बइठा के दुलार करतो।'

तिलेसरी अकचका गेल। का ई हमनी के सब करतूत जान गेल हे ? तब तो बड़ी मुस्किल हो जायत, से ऊ पुछलक—'का तूँ राम भज्जू के जानऽ हें ?'

'हँ-हँ बेटी, राम भज्जू, सिव भज्जू, किसन भज्जू, सबके जानऽ हियो ?'' का काम हो ? तुरते करवा देबो।'

तिलेसरी समझलक कि राम भज्जू के साथ हम्मर प्रेम के बारे में ई जान गेल हे। से एकरा से मिलिए के रहे में फयदा हे। बोलल—'भात होवे दे, तनि देरी में अइहें आउ बड़का कटोरी ले के अइहें। दाल-भात-तीना देबो, आउ राम भज्जू के बात केकरो से मत कहिहें।'

सात घाट के पानी पिये ओली ऊ भिखारिन के असलियत समझे में देरी न लगल। ओकरा एगो अच्छा गँहकी मिल गेल हल जेकरा गाहे-बगाहे भँजावल जा सकऽ हे। ऊ गाँव के बाहर अप्पन तम्बू में चल गेल।

खानाबदोसी के ई जमात, आज एक हफ्ता से बराबर पहाड़ के तलहट्टी में डेरा डालले हे। 15-20 गो तम्बू गिरल हे आउ एकह गो तम्बू में एकह परिवार रहऽ हे। दिन खनी एहनी के मरद बराबर पहाड़ से सियार, खिखिर, खरहा, साँप आउ साहिल पकड़ लावऽ हथ। साँझ खनी माँस पकऽ हे। एहनी के औरत पास-पड़ोस के गाँव से भात-रोटी माँग के लावऽ हे आउ सब मिल के रात में खा-पीअऽ हे। कभी-कभी महुआ के दारू पी के एहनी रात-रात भर नाचऽ हथ।

आज दिन रहते डोमन के एगो सियार आउ दू गो साहिल हाथ लग गेल हल। अप्पन तम्बू में आ के अप्पन मेहरारू झुलनी से कहलक—'भात माँग लाव, तब तक हम सियार के झोलऽ हिओ। आउ हँ तनि मसाला भी रगड़ दे झुलनी।

मसाला पीस के पथले पर छोड़ देलक आउ कटोरी ले के गाँव में चल गेल, बाकि खालिये कटोरी देख के डोमन साँप नियन फुँफकारल—'भात न मिललो तऽ ओनहीं केकरो हीं रह काहे न गेले।' भुलनी दाँत निपोरे लगल तऽ डोमन आउ बिगड़ल—'बतीसी देखा देले, एही पैना से तोड़ देबो।'

'अरे बिगड़ैत काहे हें राजा, आज खाली भाते नऽ, दालो-तीना खिलैबो। तनि सबुर करऽ।'

डोमन के तेवर बदल गेल—'देख भुलनी, दिन भर सियार-खिखिर के पीछे दउड़इत-दउड़इत अक्किल गुम हो जाहे। साँझ खनी कुच्छो बोल दियो, तऽ तूँ खराब न मानिहें डोमन भुलनी के अप्पन बाँह में दबा लेलक, फिन आँख में कहलक–'पौ बारह हो।'

भुलनी तम्बू से कटोरा के जगह अलमुनिया के बड़का थरिया निकाललक आउ छमकइत सिमरा गाँव में चल गेल। ओकरा पहुँचे में तनि देरी भे गेल, तऽ तिलेसरी हाली-हाली हुलक के दूरा पर देखे जा हल। ओकरा डर हल कि भिखारिन कहीं भात लेले बिना घुर न जाय आउ राम भज्जू के रहस्य खोल न देवे। तब तो सब गुड़-गोबर हो जायत। से तिलेसरी कभी गलियो में चक्कर लगा जाय। एकरा से आम के आम आउ गुठली के दाम भी मिल जाय—राम भज्जू भी मिल जाय, रात के अन्हारा में गलबाहीं भी हो जाय। ई तरी दुन्नों अन्हार गली के एगो भीत्ती तर लपटायल हल कि भुलनी आ गेल। तिलेसरी तनि अलगे होके राम भज्जू पर खिसिआयल आउ भुलनी से घिघिआयल—'तोर असरा में घर से निकललियो हल कि ई करिअट्ठा से टकरा गेलियो।'

भुलनी कहलक—'ई उमर में ई सब होतहीं रहऽ हे बेटी ! हम तोरा नियन हली तऽ चार-चार छैलन के नचावऽ हलियो।'

तिलेसरी खुस होके भुलनी के अप्पन दूरा पर ले गेल आउ घर से ढेर मानी भात-दाल तीना लाके ओकर थरिया भर देलक। भुलनी खुस होके आसीर्वाद देवे लगल—'तोरा दुलहा कभी अपना से अलगे न रखतो, खुस रह बेटी।'

तिलेसरी गदगद होके कहलक—'जब जरुरत होतो तब चल अइहऽ।'

एक रोज जब हम बराबर के तलहट्टी में घूमे गेली तब एगो फुरमुट में साहिल के एगो जोड़ा के कुलेल करइत देखली। जब ओहनी अप्पन देह के काँटा फुलावथ तऽ छाता नियन लउके लगे। सूरज के साँझ के किरिंग ओहनी पर परइत हल आउ

ओहनी खुसी में उछलइत हलन। ओही घड़ी एगो पत्थर ओहिजा आ के गिरल आउ ओकर चोट से एगो साहिल तुरते दम तोड़ देलक। दुसरका एतना दुखी हल कि अप्पन मरल साथी के छोड़ के नऽ भागल। ऊ ओकरा सूँघइत रहल, तबहियें एगो करिआ आउ मोटगर अदमी आ के दुन्नो साहिल के पकड़लक आउ बुदबुदाइत लेके चल देलक।

हमरा ई घटना एतना परभावित कइलक कि हम साहिल मारे ओला के पीछे-पीछे जाय लगली। ऊ खुसी में झपट रहल हल। जब ऊ तम्बू में पहुँचल तब हमरा नियन नया अदमी के देख के ओहनी ईंटा-पत्थर लेके हमरा पर दउड़लन। हम बड़ी नेवतइ से कहली—'हम तोहनी के कुच्छो करे न अयलियो हे, बलुक अपने काम से घुमइत हली तब इनका साहिल मारइत देखली।'

'का तूँ साहिल खयबऽ ? एगो ला दियो कि कोई खोपिया हऽ।'

'खोपिया-उपिया नऽ ही बाबा ! हम एगो तोहनिये नियम अदमी ही।'

तब तूँ हमनी के बीच में काहे पड़लऽ ? तोहनी के हमरा सियार-साहिल खायल भी अच्छा नऽ लगे। अपने तो गुड़-दूध पीते होयबऽ।'

हम बात के भरमावे ला कहली—'दूध-गुड़ कहाँ मिलऽ हे, बाकि आज हम तोहनिये साथे खयबो।'

'इहाँ के खाय निगलैतो'—डोमन अवाज कयलक।

'तोहनी कइसे निगलऽ हें, तोहनियो तो आखिर अदमिये हें।'

'सरकार हमनी के अदमी कहाँ बुझऽ हे। रहेला एक बित्ता जमीन तो देबे न करे।'

हम तनि अपनापन देखौली—'ई तलहट्टी में अगर जमीन मिल जाय तऽ तोहनी इहें बसल करिहें। मेहनत मजूरी कर लिहें।'

हम्मर बात सुनके दू-चार गो जवान हमरा भिर धमक आयल। ओहनी के देह से अजब गंध आ रहल हल। लगल कि ओहनी के बोलला पर हमरा ओंकाई बरे लगल, से हम दू-चार कदम पीछे हट गेली। एकरा पर एगो बोलल—'हमनी से छुआय में डरइत हऽ, तऽ जमीन कउची दिलयबऽ।'

'नऽ भाई, असइन काहे सोचऽ हें, हम तो तम्बू में बइठ सकऽ हियो।'

तब एगो जवान हम्मर हाथ पकड़ लेलक आउ अप्पन तम्बू में खींच के ले गेल। तम्बू का, कबाड़ीखाना हल। एक दन्ने पत्थर रख के खाय बनावे ला चुल्हा बनल

हल। बगले में एगो मारल सियार पड़ल हल। ओकरे बगल में लइका हग देलक हल आउ ओहिजे चटाई पर पड़ल मेमिआइत हल। एगो गेन्दरा निकाल लैलक आउ ओकरा पर हमरा बइठे कहलक। हमरा चक्कर आवे लगल, तइयो हम गेन्दरा पर बइठ गेली। तुरते उड़िस के जबरदस्त हमला भेल। दिने खनी हम्मर देह पर चढ़े लगल। बदबू के एगो भभक्का हम्मर नाक में घुस गेल। जदि थूक फेंके बहरी न निकलती हल तो गस आ जाइत हल।

जइसहीं तम्बू से निकलली तऽ साहिल मारे ओला डोमन बोलल—'बाबू, हमरा हीं तनि चलऽ, मेहरारू तीन दिन से बेमार हे। डॉक्टर से कह के कुछ गोली-उली दिया देतऽ हल।'

जइसहीं हम ओकर तम्बू में घुसली तऽ देखली कि ऊ साहिल के भूँज रहल हल। बिन तेल के भूँजे से चिराइन महकइत हल। हम्मर नाक में फिनो बदबू घुसल, तऽ हमरा ओंकाई बरे लगल। तम्बू के बहरी खड़ा रहली आउ कहली—'हमरा साथे चल, डॉक्टर से दवाई दिला दियो।'

भुलनी टुभक पड़ल—'डॉक्टर से दवाई का दिलयबऽ बड़ बाबू, एकर घर में आजे तक तो हियो। कल से चन्दू हीं चल जइबो। ई छव महीना ला हमरा बंधिक रख देलको हे।'

डोमन झँझुआयल—'आज भर हमरा हीं हे तऽ, हम्मर फर्ज का हे ? आउ सब दिन ला तूँ चन्दू हीं जाइत हें ? छव महीना के बाद तो आइए जइबे। अगर ओहु बेमार बनाके भेजको आउ एकाध गो लेले आ गेलें, तऽ उपरे से खियावे-पियावे के आफत।'

भुलनी गुम हो गेल आउ माँस भूँजे में लग गेल।

हम डोमन से पुछली—'सच बताव डोमन, तऽ हम तोरा मदद करबो। तोहनी गाँव के लइकन के ठग के ले जाहें आउ सहर में बेच दे हें। अइसन काहे करऽ हें ?'

'ई काम हमनी कइसे कर सकऽ ही बाबू ! ई तो सूट-बूट पेन्हे ओलन मिनिस्टर आउ अफसर के लइकन-फइकन करऽ हथन। हमनी से ई सब काम पटत ?'

तम्बू के वातावरन आउ ई कड़वा सच सहे के ताकत हमरा में न हल। से हम कल फिनो आवे के बहाना करके उहाँ से चल देली। तेजी से चल के घरे पहुँचली तऽ तिलेसरी के माय तिलेसरी के खोजे भुलेटन हीं चल गेल हल।

अभ्यास-प्रश्न

मौखिक :

(क) लेखक के कउन घटना परभावित कइलक ?

(ख) 'खोपिया-उपिया नऽ ही बाबा ! हम एगो तोहनिये नियर अदमी ही'—ई के कह रहल हे आउ काहे ?

(ग) तम्बू के कबाड़ीखाना काहे कहल गेल ?

(घ) 'ऊ साहिल के भूँज रहल हल'—ई वाक्य से तोर मन में जीउ के प्रति का भाव उठऽ हे ? बतावऽ।

(ङ) पाठ से पाँच गो प्राकृतिक दिरिस कें नाम बतावऽ।

लिखित :

1. 'बराबर के तलहट्टी में' पाठ के लेखक के परिचय पाँच वाक्य में दऽ।
2. खानाबदोसी केकरा कहल जाहे ?
3. डोमन आउ भुलनी के माध्यम से नट-नट्टिन के जीवन के बारे में पाँच वाक्य लिखऽ।
4. सेयान होइत बेटी के मतारी कउन सीख देवऽ हे ?
5. खानाबदोस लोग मांस खायला बराबर पहाड़ से कउन-कउन जीउ पकड़ के लावऽ हथ ?
6. तिलेसरी काहे अकचका गेल ?
7. नट-नट्टिन के जीवन के सभ्य बनावे खातिर सरकार के तरफ से कउन-कउन उपाय कैल जाए ? अप्पन समझ से लिखऽ !
8. नीचे लिखल वाक्य के संदर्भ सहित व्याख्या करऽ :

(क) ई काम हम कइसे कर सकऽ ही बाबू, ई तो सूट-बूट पेन्हे ओलन मिनिस्टर आउ अफसर के लइकन–फइकन करऽ हथन।

(ख नी कइसे निगलऽ हें, तोहनियो तो आखिर अदमिये हें।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल मुहावरा के अर्थ लिखऽ आउ वाक्य में प्रयोग करऽ :

   (क) सात घाट के पानी पीना ।

   (ख) आँख से खा जाना ।

   (ग) बतीसी दिखाना ।

   (घ) अक्किल गुम होना ।

   (ङ) आम के आम गुठली के दाम ।

योग्यता-विस्तार :

1. 'सरकार हमनी के अदमी कहाँ बुझऽ हे।' ई वाक्य में लेखक के कउन भाव प्रकट होवइत हे ?
2. बराबर के तलहट्टी पर एगो छोट निबंध लिखऽ।

सब्दार्थ :

माय	—	माँ
खखुआयल	—	खिसिआयल
धर	—	पकड़
कपार	—	माथा
उपट गेल	—	बिला गेल
दूरा	—	दलान
रहस्य	—	राज
खोपिया	—	खुफिया, गुप्तचर
भिर	—	नजदीक
गेन्दरा	—	बिछौसी
गस	—	बेहोसी
फर्ज	—	करतब

●●●